रात्रि क्लास 19/9/64 :– बाप को सर्विस का शौक है तो बच्चों को भी सर्विस का शौक चाहिए। सर्विस करते हैं सो अपने लिए ही करते हैं। अपना और औरों का कल्याण है तब ही बाप के दिल पर चढ़ेंगे। दिलवाला तो एक ही है। उनको न देवता, न मनुष्य कहेंगे। हम आत्माओं का बाप है। बाप देखते हैं, सब दुखी हैं तो आते हैं। परमधाम का मार्ग कोई बताय न सके सिवाय तुम बच्चों के। जैसे बाप रहमदिल है, तुम बच्चों को भी रहमदिल बनना है। दुनिया तो घोर अंधियारे में है, कुम्भकर्ण की नींद में है। रावण सम्प्रदाय है ना। नाम सबके अलग रखे हुए हैं। आसुरी सम्प्रदाय कोई अपन को दुखी नहीं समझती; क्योंकि उनको पता ही नहीं दुख किसको कहा जाता है। मनुष्य कहते हैं बहुत दुख है। परमात्मा ने दुख की सृष्टि रची क्यों? बाप कहते हैं– हम तो सुख की सृष्टि रचते हैं। दुख देने वाले रावण सम्प्रदाय है। अब चलो सुखधाम। देह सहित सब मित्र–संबंधियों आदि को छोड़ो। सब संबंधियों से मोह तोड़ मेरे साथ जोड़ो। तो भी देखो ..... हैं। बाप कहते हैं, मैं लेने आया हूँ ये बात कोई समझाय नहीं सकते। तुम्हारा लौकिक बाप भी है, पारलौकिक बाप भी है। ये एक ही बार अथाह सुख देने वाला है। कल्प पहले जिन्हो(ने) लिया है वो लेते हैं। बाप है, मात–पिता हैं और भाई–बहन। और कोई संबंध नहीं। गाते भी हैं हम सब ब्रदर्स हैं, एक बाप के बच्चे हैं। प्रजापिता ब्रह्मा के सन्तान सब भाई–बहन ठहरे। परन्तु, (वो) समझना, उस अवस्था में रहना बहुत मुश्किल है। बुद्धि की समझ बहुत चाहिए। जानते भी हैं, मौत सामने है, उनसे पहले बाप से पूरा वर्सा लेना है। पूरा वर्सा उनको मिलेगा जो कर्मातीत अवस्था में रह सर्विस भी करेंगे। यहाँ तुम जीते जी खुशी से बाप की गोद में जाती हो, जब निश्चय होता है ये वो ही बेहद का बाप है जिससे राजाई पद मिलता है। सिर्फ बाबा कहने से मुख मीठा नहीं। बाबा से हम बहुत साहुकार, पदमपति बनते हैं। सिर्फ दूसरे जन्म की बात है। मनुष्य समझते हैं, काला मुँह तो कर लें। वहाँ पता नहीं ये मिलेगा वा नहीं। कल्प पहले वाले ही आकर ब्राह्मण बनते है। शूद्र कुल में गया तो और मरे। माया बड़ी बलवान है। अच्छे–2 के बुद्धि पर ताला लगाय देते हैं। बाप है ज्ञान का सागर। ...हते हैं, यहाँ शान्ति आदि बहुत मिलता है। ये शान्ति आंनद फिर अविनाशी बन जाता है। बाप आते हैं पुरुषार्थ (कराने)। जो करते हैं वो छिपे नहीं रहते। उनको सर्विस बिगर बैठने सुख न आता। बैठेंगे तो मुफ्त अपन को

घाटा लगाय देंगे। ये तो बच्चे जानते हैं सबसे अच्छा मंदिर सोमनाथ का। फिर कारीगरी का मंदिर दिलवाला का बना हुआ है। कितनी कारीगरी है– नीचे राजयोग, ऊपर में राजाई। तुम बहुत सर्विस कर सकती हो। और कोई मंदिर में इतना मज़ा नहीं है। अब की तु(म्हारी) सर्विस का (वो) यादगार है। वंडर तो ये तुम्हारा हेड ऑफीस भी यहाँ है। पुजारी सो फिर पूज्य बनने हैं। दोनों संगम पर हैं। पूज्य बनने वाले भी हैं। वो तुम पूज्य के चित्र हैं। सर्विस का ..... अजुन नहीं आता है। तुम जाकर बुद्धि दो तो वंडर खावेंगे। (अ)न्दर (घू)सना चाहिए, जाना चाहिए। तुम सबकी बायोग्राफी बताय सकती हो। बाप तो डायरैक्शन देंगे। मम्मा–बाबा तो नहीं जावेंगे; परन्तु बच्चों में शौक नहीं। विचार–सागर–मंथन नहीं करते हैं। (यह) माया नाक से बड़ा अच्छा पकड़ती है। कब नाम से, कब कान से पकड़ लेती है। (मंदिर) वाले को पकड़ने से तुम बहुत सर्विस कर सकती हो। क(माई) में ग्रहचारी भी होती है। कभी अवस्था अच्छी देखो, कभी कैसी। सर्विस में बड़ा रमतबाज़ चाहिए। बाबा शक्तियों का नाम बाला करते हैं। जगाया है औरों को जगाने लिए। कोई नया अच्छा पैदा हो जावेगा।